

ଉତ୍ତରାଜ୍ୟ ପାଇଁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା ?

ସୃଷ୍ଟିକର୍ତ୍ତା ପର ଈମାନ ଇସ ଵାସ୍ତବିକତା ପର ଆଧାରିତ ହୈ କି ଚීଜେଂ ବିନା କାରଣ କେ ପ୍ରକଟ ନହିଁ ହୋତିଂ । ଆପକୋ ବସ ଇତନା ବତା ଦେନା କାଫୀ ହୈ କି ବିଶାଳ ଭୌତିକ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ ଔର ଉସମେ ରହନେ ବାଲେ ଜୀବ ଏକ ଅମୂର୍ତ୍ତ ଚେତନା ରଖିତେ ହୈ ଔର ସାରହିନ ଗଣିତ କେ ନିୟମମେ କା ପାଲନ କରିତେ ହୈ । ଏକ ସୀମିତ ଭୌତିକ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ କେ ଅସ୍ତିତ୍ବ କୀ ବ୍ୟାଖ୍ୟା କରନେ କେ ଲିଏ ଭୀ ହମେଁ ଏକ ସ୍ଵତଂତ୍ର, ସାରହିନ ଔର ଶାଶ୍ଵତ ସ୍ନୋତ କୀ ଆବଶ୍ୟକତା ହୈ ।

ଆକସ୍ମିକତା ସମ୍ବନ୍ଧ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ କା ନିର୍ମାଣ ନହିଁ କର ସକତି ହୈ, ଇସଲିଏ କି ଵହ ମୁଖ୍ୟ କାରଣ ନହିଁ ହୈ । ବଲିକ ଵହ ଦ୍ୱିତୀୟ ପରିଣାମ ହୈ, ଜୋ ଅନ୍ୟ କାରକୋ (ଯୁଗ, ସ୍ଥାନ, ପଦାର୍ଥ ଏବଂ ଉର୍ଜା) କୀ ଉପଲବ୍ଧତା ପର ନିର୍ଭର କରିବା ହୈ, ତାକି ଇନ କାରକୋ ସେ ମିଳକର କୋର୍ଦ୍ଦ ଚීଜ ଅଚାନକ ଅସ୍ତିତ୍ବ ମେ ଆଏ । ଅତଃ ସଂଯୋଗ (ଆକସ୍ମିକତା) ଶବ୍ଦ କା ପ୍ର୍ୟୋଗ କିସି ଚීଜ କୀ ବ୍ୟାଖ୍ୟା କେ ଲିଏ ନହିଁ କିଯା ଜା ସକତା ହୈ, କ୍ୟାଂକି ଆକସ୍ମିକତା କୋର୍ଦ୍ଦ ଭୀ ବସ୍ତୁ ନହିଁ ହୈ ।

ଉଦାହରଣ ସ୍ଵରୂପ, ଯଦି କୋର୍ଦ୍ଦ ବ୍ୟକ୍ତି ଅପନେ କମରେ ମେ ପ୍ରବେଶ କରେ ଔର ଖିଡ଼କୀ କା କାଁଚ ଟୂଟା ହୁଆ ପାକର ଅପନେ ଘର ବାଲୋ ସେ ପ୍ରଶନ କରେ କି କିସନେ ଖିଡ଼କୀ କା କାଁଚ ତୋଡ଼ା ଔର ବେ ଉସକୋ ଉତ୍ତର ଦେଂ କି ଅଚାନକ ଟୂଟ ଗଯା ହୈ, ତୋ ଯହ ଉତ୍ତର ଗଲତ ହୋଗା । ଇସଲିଏ କି ଉସନେ ଯହ ନହିଁ ପୂଛା ଥା କି ଖିଡ଼କୀ କା କାଁଚ କୈସେ ଟୂଟା, ବଲିକ ଉସନେ ଯହ ପୂଛା ଥା କି ତୋଡ଼ା କିସନେ ହୈ ? ଆକସ୍ମିତା କ୍ରିଯା କା ବିଷେଶଣ ହୈ, ନ କି କର୍ତ୍ତା । ସହି ଉତ୍ତର ଯହ ହୋଗା କି ଵହ କହେ କି ଇସକୋ ଅମୁକ ନେ ତୋଡ଼ା ହୈ । ଫିର ବ୍ୟାଖ୍ୟା କରେ କି ଉସନେ ଇସେ ଜାନବୂଜ୍ଞ କର ତୋଡ଼ା ହୈ ଅଚାନକ ଟୂଟ ଗଯା ହୈ । ଯହ ବାତ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ ଔର ସୃଷ୍ଟିଯୋ ପର ପୂରେ ତୌର ପର ଲାଗୁ ହୋତି ହୈ ।

ଯଦି ହମ ପ୍ରଶନ କରେ କି କିସନେ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ ଔର ସୃଷ୍ଟିଯୋ କେ ବନାଯା ଔର କୋର୍ଦ୍ଦ ଉତ୍ତର ଦେ କି ଯହ ଅଚାନକ ବଜୂଦ ମେ ଆ ଗ୍ୟେ, ତୋ ଯହ ଉତ୍ତର ଗଲତ ହୋଗା । ଇସଲିଏ କି ହମନେ ଯହ ପ୍ରଶନ ନହିଁ କିଯା ହୈ କି ବ୍ରହ୍ମାଂଡ ବଜୂଦ ମେ କୈସେ ଆଯା, ବଲିକ ହମନେ ଯହ ପୂଛା ହୈ କି କିସନେ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ କୋ ପୈଦା କିଯା ହୈ । ସଂଯୋଗ (ଆକସ୍ମିତା) କୋର୍ଦ୍ଦ କର୍ତ୍ତା ନହିଁ ହୈ ଔର ନ ଵହ ବ୍ରହ୍ମାଂଡ କା ସୃଷ୍ଟିକର୍ତ୍ତା ହୈ ।

ଯହାଁ ପ୍ରଶନ ଉଠତା ହୈ କି କ୍ୟା ବ୍ରହ୍ମାଂଡ କେ ସୃଷ୍ଟିକର୍ତ୍ତା ନେ ଉସେ ସଂଯୋଗ ସେ ବନା ଦିଯା ହୈ ଯା ମକସଦ କେ ତହତ ବନାଯା ହୈ ? ବେଶକ, କାର୍ଯ୍ୟ ଔର ଉସକେ ପରିଣାମ ହି ହମେଁ ଇସକା ଜାବାବ ଦେ ସକତେ ହୁଁ ।

ଯଦି ହମ ଖିଡ଼କୀ କେ ଉଦାହରଣ କୀ ଓର ଲୌଟେ ଔର ଯହ ମାନେ କି ଏକ ବ୍ୟକ୍ତି ଅପନେ କମରେ ମେ ପ୍ରବେଶ କରିବା ହୈ ଔର ଖିଡ଼କୀ କା କାଁଚ ଟୂଟା ହୁଆ ପାତା ହୈ, ତୋ ଅପନେ ଘର ବାଲୋ ସେ ପ୍ରଶନ କରିବା ହୈ କି କିସନେ ଖିଡ଼କୀ କା କାଁଚ ତୋଡ଼ା ଔର ବେ ଉସକୋ ଉତ୍ତର ଦେତେ ହୈ କି ଅମୁକ ନେ ଇସେ ସଂଯୋଗ ସେ ତୋଡ଼ା ଦିଯା । ତୋ ଯହ ଉତ୍ତର ସ୍ଵ଀କାର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ସହି ହୈ, ଇସଲିଏ କି କାଁଚ କା ଟୂଟନା ବିନା ଯୋଜନା କେ ହୋନେ ବାଲା କାମ ହୈ ଔର ହୋ ସକତା ହୈ କି ଅଚାନକ ଯା ସଂଯୋଗ ସେ ଟୂଟ ଜାଏ । ପରନ୍ତୁ ଯଦି ଵହି ବ୍ୟକ୍ତି ଦୂସରେ ଦିନ ଅପନେ କମରେ ମେ ପ୍ରବେଶ କରେ, ଔର ପାଏ କି ଖିଡ଼କୀ କେ କାଁଚ କୀ ମରମ୍ମତ ହୋ ଚୁକି ହୈ, ଔର ଵହ ଅପନେ ଘର ବାଲେ ସେ ଉସକେ ବାରେ ପୂଛେ, ଔର ବେ ଉସକୋ ଉତ୍ତର ଦେଂ କି ଅନୁକ ନେ ଉସକୋ ଅଚାନକ ଠୀକ କର ଦିଯା, ତୋ ଯହ ଉତ୍ତର ଅସ୍ଵିକାର୍ଯ୍ୟ ହୋଗା, ବଲିକ

तार्किक तौर पर असंभव होगा, क्योंकि काँच की मरम्मत का काम कोई बिना योजना के होने वाला काम नहीं है। बल्कि यह एक व्यवस्थित क्रिया है, पहले टूटे हुए काँच को हटाना होगा, खिड़की के फ्रेम को साफ़ करना होगा, फिर फ्रेम के नाप से नए काँच को ठीक से काटना होगा, फिर नए काटे हुए काँच को रबर से फ्रेम में सेट करना होगा, फिर फ्रेम को उसके स्थान पर सेट करना होगा। यह तमाम काम अचानक से नहीं हो सकते हैं, बल्कि इच्छा से होंगे। तार्किक नियम कहता है कि यदि काम किसी व्यवस्था के तहत नहीं, बल्कि बिना योजना के होने वाला हो, तो वह अचानक हो सकता है। लेकिन जहाँ तक समन्वित एवं संगठित क्रिया की बात है, या ऐसा काम जो किसी व्यवस्था के तहत हुआ हो, तो वह अचानक नहीं हो सकता है, बल्कि वह इरादे के साथ होता है।

जब हम ब्रह्मांड और प्राणियों पर नज़र दौड़ाते हैं तो हम पाते हैं कि यह सुदृढ़ व्यवस्था के तहत बनाए गए हैं, जैसा कि यह सटीक नियमों के अधीन होकर संचालित होते हैं। इसलिए हम कहते हैं कि यह तार्किक तौर पर असंभव है कि ब्रह्मांड और प्राणियों का निर्माण अचानक या संयोग से हो गया हो, बल्कि यह सब कुछ एक इरादे के तहत पैदा किए गए हैं। इस प्रकार सृष्टि की रचना के प्रश्न से संयोग बिलकुल बाहर हो जाता है। [10] चैनल यकीन, नास्तिकता और अधर्म की आलोचना

<http://www.00000000.000/0000?0=0000000000>

एक सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं :

1- सृष्टि करना एवं अस्तित्व में लाना :

अर्थात् ब्रह्मांड को अनस्तित्व से अस्तित्व प्रदान करना एक पूज्य सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है।

"वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना और रात तथा दिन के एक के पश्चात् एक आते-जाते रहने में, बुद्धिमानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।" 2- अनिवार्य होना :

सूरा आल-ए-इमरान : 190]

यदि हम कहें कि हर वस्तु का एक स्रोत है, और उस स्रोत का एक स्रोत है, और यह सिलसिला लगातार चलता रहे, तो तर्क यह कहता है कि हम किसी आरंभ या अंत तक पहुँचें। यह ज़रूरी है कि हम एक ऐसे स्रोत तक पहुँचें, जिसका कोई स्रोत न हो, जिसको हम "मूल कारण" के नाम से जानते हैं, जो मूल घटना से अलग एक चीज़ है। उदाहरण के तौर पर, जब हम महाविस्फोट को मूल घटना मान लें, तो सृष्टिकर्ता वह मूल साधन उत्पन्न करने वाला है, जिसने इस घटना को अंजाम दिया।

3- सुदृढ़ तथा व्यवस्थित बनाना :

अर्थात् ब्रह्मांड का सूक्ष्म निर्माण तथा उसके सटीक नियम एक पूज्य सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का प्रमाण हैं।

"जिसने ऊपर-तले सात आकाश बनाए। तुम अत्यंत दयावान् की रचना में कोई असंगति नहीं

देखोगे। फिर पुनः देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देता है?" [12] "निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के साथ पैदा किया है।" [13]

[सूरा अल-मुल्क : 3] 4- ध्यान रखना :

[सूरा अल-क़मर : 49]

ब्रह्मांड का निर्माण कुछ इस तरह किया गया है कि वह मानव जीवन के लिए बिल्कुल मुनासिब हो और यह सब अल्लाह की सुन्दरता एवं रहमत के गुणों को दर्शाता है।

"अल्लाह वह है, जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया, और आकाश से कुछ पानी उतारा, फिर उसके द्वारा तुम्हारे लिए फलों में से कुछ जीविका निकाली, और तुम्हारे लिए नौकाओं को वशीभूत कर दिया, ताकि वे सागर में उसके आदेश से चलें और तुम्हारे लिए नदियों को वशीभूत कर दिया।"

[14] 5- वशीभूत तथा प्रबंध करना :

[सूरा इब्राहीम : 32]

यह अल्लाह के प्रताप तथा असीम शक्ति के गुणों से संबंधित है।

"तथा उसने चौपायों को पैदा किया, जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान और बहुत-से लाभ हैं और उन्हीं में से तुम खाते हो। तथा उनमें तुम्हारे लिए एक सौंदर्य है, जब तुम शाम को चराकर लाते हो और जब सुबह चराने को ले जाते हो। और वे तुम्हारे बोझ, उस नगर तक लादकर ले जाते हैं, जहाँ तक तुम बिना कठोर परिश्रम के कभी पहुँचने वाले न थे। निःसंदेह तुम्हारा पालनहार अति करुणामय, अत्यंत दयावान् है। तथा घोड़े, खच्चर और गधे पैदा किए, ताकि तुम उनपर सवार हो और शोभा के लिए। तथा वह (अल्लाह) ऐसी चीजें पैदा करता है, जो तुम नहीं जानते।"

[15] 6- खास करना :

[सूरा अल-नह्ल : 5-8]

इसका मतलब है कि हम ब्रह्मांड में जो भी चीज़ देखते हैं, उसके कई रूप हो सकते थे, परन्तु अल्लाह ने उसके लिए उन रूपों में से सबसे उत्तम रूप को चुना है।

"फिर तुमने उस पानी के बारे में विचार किया, जिसे तुम पीते हो? क्या तुमने उसे बादल से बरसाया है अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं? यदि हम चाहें तो उसे खारा कर दें, फिर तुम आभार व्यक्त क्यों नहीं करते?" [16] "क्या आपने अपने पालनहार को नहीं देखा कि वह किस प्रकार छाया को फैलाता है? यदि वह चाहता, तो उसे स्थिर बना देता। फिर हमने सूर्य को उस छाया की निशानी बना दी।"

[सूरा अल-वाक़िया : 68-70] कुरआन यह समझाने के लिए कई संभावनाओं का उल्लेख करता है कि ब्रह्मांड कैसे बना और कैसे अस्तित्व में आया। [18]

[सूरा अल-फुरक़ान : 45] [सूरा अल-तूर : 35-37]

"क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं ? या इन्होंने ही पैदा किया है आकाशों तथा धरती को ? वास्तव में, ये विश्वास ही नहीं रखते हैं। या फिर इनके पास आपके पालनहार के खजाने हैं या यही (उसके) अधिकारी हैं ?" [19] क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं ? :

العنوان: ملخص المقالة: ٢٠٢٠، ٢٠٢٠ & ٢٠٢١؛ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠ ٢٠٢٠

यह परिकल्पना कि ब्रह्मांड का कोई निर्माता नहीं है, कई प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है, जो हम अपने आस-पास देखते हैं। एक साधारण-सा उदाहरण, जैसा कि हम कहें कि मिस्र के पिरामिड ऐसे ही अस्तित्व में आ गए हैं, इस संभावना का खंडन करने के लिए पर्याप्त है।

या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं ? :

अपने आपको पैदा करना : क्या ब्रह्मांड अपने आपको पैदा कर सकता है ? खुद "सृष्टि" शब्द ऐसी चीज़ को इंगित करता है, जो पहले नहीं थी और फिर अस्तित्व में आई। अपने आपको पैदा करना तार्किक और व्यावहारिक रूप से असंभव है। यह इस वास्तविकता पर आधारित है कि अपने आपको पैदा करने का अर्थ यह है कि कोई चीज़ एक ही समय में मौजूद थी भी और नहीं भी। ज़ाहिर-सी बात है कि ऐसा होना असंभव है। यह कहना कि मनुष्य ने अपने आपको पैदा किया है, इसका अर्थ है कि वह अस्तित्व में आने से पहले भी मौजूद था।

यहाँ तक कि जब कुछ संशयवादी बात करते हैं और एकल-कोशिका वाले जीवों में आत्म-निर्माण की संभावना पर जोर देते हैं, तो इस चर्चा को शुरू करने के लिए पहले यह मान लेना पड़ेगा कि पहली कोशिका पहले से मौजूद रही है। फिर, यदि हम इस बात को मान लें, तो यह आत्म-निर्माण नहीं है, बल्कि यह एक प्रजनन विधि (अलैंगिक प्रजनन) है, जिससे एक ही जीव से वंश उत्पन्न होता है और उसे केवल उसी पिता की आनुवंशिक सामग्री विरासत में मिलती है।

जब आप लोगों से प्रश्न करेंगे कि आपको किसने पैदा किया है, तो बहुत-से लोग यह सादा-सा उत्तर देंगे कि मेरे माता-पिता मेरे इस दुनिया में आने के मूल कारण हैं। यह स्पष्ट है कि यह संक्षिप्त उत्तर है और इस गुत्थी को सुलझाने से बाहर निकलने का रास्ता खोजने का प्रयास मात्र है। स्वाभाविक तौर पर मनुष्य गहरा मंथन करना नहीं चाहता और न इसकी कोशिश करता है। वह जानता है कि उसके माँ-बाप मर जाएँगे और वह ज़िंदा रहेगा। फिर उसके बाद उसके बच्चे आएँगे, जो यही उत्तर देंगे। वह अच्छी तरह जानता है कि उनके बच्चों को पैदा करने में उसका कोई हाथ नहीं है। अतः वास्तविक प्रश्न यह है कि किसने मानव जाति को पैदा किया ?

या उन्होंने ही आकाशों तथा धरती को पैदा किया है ? :

यह दावा कि उसी ने आकाशों एवं धरती को पैदा किया है, उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के सिवा किसी ने नहीं किया है, जिसने मानव जाति की ओर अपने रसूलों को भेजकर इस वास्तविकता से परदा

उठाया है। सत्य तो यह है कि वही सृष्टिकर्ता, अस्तित्व प्रदान करने वाला और आकाशों तथा धरती एवं उनके बीच की सारी चीज़ों का मालिक है। उसका कोई साझी नहीं है और न ही कोई बच्चा।

"आप कह दें : उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (पूज्य) समझते हो। वह कण बराबर भी अधिकार नहीं रखते, न आकाशों में और न धरती में तथा उनका उन दोनों में कोई भाग नहीं है और उस अल्लाह का उनमें से कोई सहायक नहीं है।" [20] [सूरा सबा : 22]

यहाँ एक उदाहरण देख सकते हैं कि यदि किसी सार्वजनिक स्थल में कोई बैग पड़ा मिले और कोई व्यक्ति उसका दावा न करे, केवल एक व्यक्ति सामने आए और बैग तथा उसके अंदर जो कुछ है, उसकी तफसील यह प्रमाणित करने के लिए बताए कि बैग उसी का है, तो यह बैग उसी का माना जाएगा, जब तक कोई दूसरा दावेदार सामने न आए। यह इनसानी कानूनों के अनुसार है।

सृष्टिकर्ता का अस्तित्व :

यह तमाम बातें हमें एक ही उत्तर की ओर ले जाती हैं, जिससे भागना संभव नहीं है। वह यह है कि सृष्टिकर्ता का वजूद है। आश्चर्य है कि मनुष्य इस संभावना से दूर हमेशा बहुत सारी संभावनाओं को गढ़ता है। गोया कि यह एक काल्पनिक संभावना हो, जिसको सच मानना मुम्किन न हो और न उसकी सच्चाई का पता लगाया जा सकता हो। अगर हम निष्पक्षता और सच्चाई के साथ विचार करें और एक गहरी वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो इस हकीकत तक पहुँच जाएँगे कि पूज्य सृष्टिकर्ता के बारे में सब कुछ समझ पाना संभव नहीं है। क्योंकि उसी ने पूरे ब्रह्माण्ड को पैदा किया है, इसलिए यह ज़रूरी है कि वह इन्सानी सोच से ऊपर हो। यह मानना तर्कसंगत है कि इस अदृश्य शक्ति के अस्तित्व तक पहुँचना आसान नहीं है, इसलिए ज़रूरी है कि यह शक्ति स्वयं अपने बारे इस तरह से बताए कि मानव दिमाग़ की समझ में आ जाए। इसी तरह मनुष्य के लिए भी ज़रूरी है कि वह यकीन करे कि यह अदृश्य शक्ति वास्तविक है, मौजूद है और इस अंतिम संभावना पर यकीन से भागना संभव नहीं है, जो इस कायनात के राज की शेष व्याख्या है।

"अतः अल्लाह की ओर दौड़ो। निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से स्पष्ट सचेतकर्ता हूँ।" [21]
यदि हम हमेशा रहने वाला जीवन, नेमत और भलाई चाहते हैं, तो हमारे लिए इस मावूद, सृष्टिकर्ता और पैदा करने वाले पर ईमान लाना एवं उसे मानना ज़रूरी है।

[सूरा अल-ज़ारियात : 50]

翦刀剪刀 剪刀剪刀 剪刀剪刀

網址: <http://000-00000.000/00/00/000/5/>

網址 网址: <http://000-00000.000/00/00/000/5/>

時間 14:00 01 2025 2025 06:21:41 00